ऐसे मनायें शिवरात्रि का महापर्व

देवाधिदेव महादेव शिव की महिमा अनन्त है उनके कर्म दिव्य हैं और जन्म अलौकिक है। इसी दिव्यता और अलौकिकता के कारण ही उनसे जुड़े प्रसंग रहस्यमय बनकर किमवदन्तियों में बदल गये हैं। जैसे कहा जाता है कि शिव को अखाद्य पदार्थ जैसे भांग-धतूरा इत्यादि प्रिय हैं, भूत-प्रेत इत्यादि उनके 9गण" हैं, उनके गले में सर्प की माला सुशोभित है और वे हिमाच्छादित हिमालय में निवास करते हैं...। इसी प्रकार के अन्य अनेक रोचक और रहस्यमय पौराणिक प्रसंग उनके जीवन से जुड़े हुए हैं। इसी पौराणिक रहस्यमयता के कारण ही शिवरात्रि का महात्म्य कर्मकाण्ड और वर्ष में केवल एक बार रस्म अदायगी के तौर पर जुड़कर रह गया है। आवश्यकता है शिवरात्रि से जुड़े हुए आध्यात्मिक रहस्य के सत्य उद्घाटन की जिससे सच्ची शिवरात्रि को मनाकर अपने जीवन में "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" को समाहित करके इसे सफल बना सकें। शिव की पूजा "शिव लिंग" रूपी प्रस्तर के रूप में की जाती है। शिवलिंग को "ज्योतिर्लिंग" भी कहा जाता है। द्वादश ज्योतिर्लिंग" पूरे भारत में विख्यात हैं जिनका दर्शन और अर्चन करना प्रत्येक धर्मपरायण भारतीय की पुण्य आस होती है। ज्योतिर्लिंग, परमपिता परमात्मा शिव के अव्यक्त और अभौतिक स्वरूप की यादगार है। यह शिव के नई दुनिया की सृजनात्मक और अन्तर्निहित सृजनात्मक शक्ति का परिचायक है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से शिव "कल्याणकारी स्वरूप" का परिचायक है तथा लिंग "चिन्ह अथवा प्रतिमा" को व्यक्त करता है। इस प्रकार शिव लिंग अर्थात् कल्याणकारी शिव परमात्मा की प्रतिमा। वैसे भी ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव के ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप को ही व्यक्त करता है। प्रायः सभी धर्मों में परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को "नूर", "डिवाइन लाइट", "ओंकार" ही माना गया है। अतः शिव सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं।

सच्ची शिवरात्रि .-

भारतीय धार्मिक परम्परा के अनुसार शिवरात्रि का पर्व प्रतिवर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष के अमावस्या के एक दिन पूर्व मनाया जाता है। इसके बाद शुक्ल पक्ष का आरम्भ होता है तथा कुछ ही दिनों बाद नव संवत् अर्थात् नये वर्ष का प्रारम्भ होता है। शिव के साथ जुड़ी हुई "रात्रि" का सामान्य अर्थ उस रात्रि से नहीं है, जो पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर कक्षीय चक्रण के कारण आती है। जिस प्रकार "शिव" शब्द का आध्यात्मिक अर्थ "कल्याणकारी" होता है, उसी प्रकार दार्शनिक दृष्टिकोण से रात्रि शब्द "अज्ञानता, पापाचार और बुराइयों" का प्रतीक है। अतः शिवरात्रि अर्थात् घोर तमोप्रधान धर्म ग्लानि के समय लोक कल्याणार्थ परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण का यादगार पर्व। जब इस संसार में धर्म का स्थान कर्मकाण्ड, कर्म का स्थान आडम्बर ले लेता है। संसार में चारों ओर पापाचार, अनाचार और भ्रष्टाचार का ही पाप लोगों के सिर पर चढ़कर बोलने लगता है तो वही काल परमात्मा शिव के अवतरण का समय होता है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी आत्माओं के अज्ञान - अंधकार अथवा आसुरी गुणों की पराकाष्ठा का प्रतीक है इसके पश्चात् शुक्ल पक्ष परमात्मा शिव द्वारा "ईश्वरीय ज्ञान" और योग द्वारा पवित्र और सुख-शान्ति सम्पन्न नई सृष्टि के प्रारम्भ का प्रतीक है। वर्तमान सृष्टि के कालखण्ड में तमोप्रधानता और अज्ञानता अपनी चरम सीमा के अन्तिम छोर पर पहुँच चुकी है। चारों ओर पाँच विकारों का हाहाकार एवं घमासान मचा हुआ है। धर्म सत्ता, कर्त्तव्य-विमुख हो चुकी है, राज सत्ता, पथ भ्रष्ट और कर्म-भ्रष्ट हो चुकी है एवं विज्ञान सत्ता, विनाश की ओर अहर्निश कदम बढ़ा चुकी है। चारों ओर अंधकार ही अंधकार है। दिन के प्रकाश में भी बुराइयों और अज्ञानता रूपी रात्रि का

चारों ओर साम्राज्य छाया हुआ है। यही घोर अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा शिव के अवतरण का समय है। वर्तमान समय में परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर अज्ञानता के विनाश और नई सतयुगी दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्म कर रहे हैं।

बुराइयों, कुसंस्कारों एवं आसुरी प्रवृत्तियों को शिव पर चढ़ायें –

शिवरात्रि के अवसर पर शिवलिंग पर बेल-पत्र, बेर, धतूरा इत्यादि खाद्य-अखाद्य पदार्थ चढ़ाये जाने का रस्म-रिवाज प्रचलित है। भक्तजन इस दिन शिव मन्दिरों में विशेष रूप से रात्रि जागरण करके शिव की अराधना करते हैं एवं अन्न-जल का व्रत रखते हैं। परन्तु परमात्मा शिव हम मनुष्यात्माओं पर केवल उपर्युक्त भौतिक वस्तुओं को चढ़ाने मात्र से ही प्रसन्न नहीं हो सकते। क्योंकि हजारों वर्षों से शिवरात्रि के दिन व्रत, उपवास और पूजन- अर्पण का क्रम तो होता ही आया है परन्तु फिर भी आज तक शिव प्रसन्न ही नहीं हुए ? इसका आध्यात्मिक यथार्थ रहस्य यह है कि वर्तमान संगमयुग पर मनुष्यात्माओं को पावन बनाने के लिए परमात्मा शिव काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, कुसंस्कार एवं आसुरी प्रवृत्तियों का दान ले रहे हैं। इन सूक्ष्म मनोविकारों को मानसिक रूप से परमात्मा शिव के सम्मुख अर्पण करके जीवन में पवित्रता और आत्मा को बुराइयों से बचाने का महाव्रत लेना है। तभी हमारे जीवन में सुख -शान्ति एवं दिव्य-गुणों की सच्ची धारणा हो सकती है एवं परमात्मा शिव से हम अपने पुरुषार्थ अनुसार जन्म-जन्मान्तर के लिए ईश्वरीय राज-भाग्य का अधिकार प्राप्त कर सकते हैं।

ईश्वरीय सन्देश . -

इस सृष्टि पर निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव को अवतरित हुए 74 वर्ष हो चुके हैं। सृष्टि चक्र के ड्रामानुसार वे साकार मनुष्य प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमन्त्रण है कि परमात्मा शिव द्वारा दिये जा रहे इस ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण कर जन्म-जन्मान्तर के लिए श्रेष्ठ राज-भाग्य को प्राप्त करें।

। ओम् शान्ति।

– ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स